जलवायु परिवर्तन पर अमेरिकी नीति के चुनिंदा अंश

वाशिंगटन डी. सी. में सितंबर 2007 में ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन पर प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों की बैठक में बोलते हुए राष्ट्रपति जॉर्ज बुश।

जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती है। इसके प्रभाव का पैमाना और व्यापकता इतनी है कि इससे निपटने के लिए वैश्विक प्रयास ज़रूरी हैं। अमेरिका अपने हिस्से का कार्य करने को प्रतिबद्ध है और अपने यहां और अन्य देशों में ऐसी पहल कर रहा है जिनसे ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के संकट से निपटा जा सके। हम संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन पर फ्रेमवर्क तैयार करने के सम्मेलन में पूरी तरह शामिल हैं... और हम 2009 तक... पर्यावरण के लिहाज से प्रभावी और आर्थिक रूप से टिकाऊ 2012 के बाद के फ्रेमवर्क को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

******

हमारी जलवायु नीतियां व्यापक टिकाऊ विकास एजेंडा का हिस्सा हैं। विकासशील देशों का ध्यान उचित तौर पर आर्थिक विकास और अपने नागरिकों की स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य ज़रूरतें पूरी करने पर केंद्रित है। अमेरिका का विश्वास है कि जलवायु नीतियों को इन प्राथमिकताओं को पहचानना चाहिए और उनका पूरक बनना चाहिए। अमेरिका ने विकासशील देशों में दर्ज़नों भागीदारियां शुरू की हैं और उनमें भागीदारी की है जिनका मकसद ऊर्जा सेवाओं का आधुनिकीकरण कर गरीबी दूर करना और आर्थिक विकास को गति देना है। विश्व समुदाय को कम ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करना चाहिए और ऐसा इस तरीके से किया जाना चाहिए कि आर्थिक विकास को बढ़ावा मिले और राष्ट्रों को अपने लोगों के लिए ज़्यादा समृद्धि लाने में मदद मिले...।

2000-2005 के बीच अमेरिका की जनसंख्या पांच फ़ीसदी (एक करोड़ चालीस लाख लोग) बढ़ी और जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद 12 फ़ीसदी (1200 अरब डॉलर) बढ़ा। इस दौरान ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन सिर्फ 1.6 फ़ीसदी बढ़ा। नवीनतम आकलन बताते हैं कि वर्ष 2005-06 से हमारी अर्थव्यवस्था 2.9 फ़ीसदी की दर से बढ़ी है लेकिन ऊर्जा से संबंध कार्बन डाइ ऑक्साइड उत्सर्जन 1.3 फ़ीसदी कम हुआ है। यह ऐसे देशों से तुलनात्मक रूप से बेहतर है जहां कार्बन उत्सर्जन की सीमा और कारोबार के कार्यक्रम हैं। घरेलू स्तर पर कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए हमारे यहां, अनिवार्य, प्रोत्साहन आधारित और स्वैच्छिक कार्यक्रमों के दर्ज़नों विविध नीतिगत उपाय हैं।

******

ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने, इससे बचने या इसे पृथक करने से संबंधित नवीनतम प्रौद्योगिकी विकल्पों के विकास में अमेरिका अग्रणी है। राष्ट्रपति के आग्रह और कांग्रेस की मंजूरी ने इस मद में वर्ष 2001 के बाद से अब तक काफी धन (37 अरब डॉलर) मुहैया कराया है। यह राशि जलवायु से संबंधित विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रेक्षण, अंतरराष्ट्रीय मदद और प्रोत्साहन कार्यक्रमों के लिए दी गई।

******

अमेरिका ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी, ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने और वायु प्रदूषण कम करने के लिए व्यावहारिक नतीज़ों के मद्देनज़र निजी-सरकारी भागीदारी में सहयोग जैसे कई समाधानों में सक्रिय है। वर्ष 2002 से शुरू 15 द्विपक्षीय और क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन भागीदारियों के अलावा अमेरिका कई क्षेत्रों में भागीदारी के साथ काम कर रहा है: कम कार्बन उत्सर्जन के साथ बिजली उत्पादन, स्वच्छ कोयला और अग्र परमाणु प्रौद्योगिकियां, जैव-ईंधन, बैटरियों का इस्तेमाल, हाइड्रोजन से चालित वाहन जैसे नए प्रयोग, औद्योगिक और आवासीय, दोनों ही क्षेत्रों में ऊर्जा का कुशलता से इस्तेमाल जिसमें पेड़ों की अवैध कटाई और टिकाऊ वन प्रबंधन शामिल है...।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

जलवायु परिवर्तन पर अमेरिकी दृष्टिकोण

http://www.state.gov/g/oes/climate

स्वच्छ विकास तथा जलवायु के लिए एशिया-प्रशांत भागीदारी

ऊर्जा सुरक्षा, वायु प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन को कम करके सतत आर्थिक विकास और गरीबी दूर करने का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अमेरिका, भारत, आस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, जापान व कोरिया गणतंत्र- इन सात सहभागी राष्ट्रों की सरकारों तथा निजी क्षेत्र ने जनवरी 2006 में एकजुट होकर काम करने का निश्चय किया।

इस सहभागी समूह की दूसरी मंत्रीस्तरीय बैठक 15 अक्टूबर, 2007 को नई दिल्ली में हुई। इस भागीदारी में प्रमुख बाज़ारों के लिए स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी, सामग्री तथा सेवाओं के निवेश तथा व्यापार के विस्तार पर बल दिया गया। ये सहभागी विश्व की आधी अर्थव्यवस्था, आबादी और ऊर्जा उपयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं और विश्व के 65 प्रतिशत कोयले, 48 प्रतिशत इस्पात, 37 प्रतिशत एल्युमिनियम तथा 6 प्रतिशत सीमेंट का उत्पादन करते हैं।